Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ की मास्टर ऑफ फिलॉसफी (इतिहास) की उपाधि के लिए प्रस्तुत

एक

शोध–प्रबन्ध संक्षिप्तिका

2019

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करुणा

ESTABLISHED 1996

शोध निर्देशिका

प्रोफेसर डॉ0 शूरा दारापुरी

इतिहास विभाग,

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ,

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर

विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधार्थिनी

सुमन

अनुक्रमांक नं0 : 136045

नामांकन सं0 : 520/17

इतिहास विभाग,

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड,

लखनऊ– 226025

Neo-Buddhist Movement : A Historical Study of Varanasi (1956-2011)

शोध–प्रबन्ध संक्षिप्तिका

परिचय

सामाजिक जीवन में बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा सहन किये गये तिरस्कारो और उससे संघर्ष करके सम्पूर्ण दलित, पीड़ित, शोषित व वंचित समाज को सम्मान दिलाने के लिए किए गए उनके प्रयासों के क्रम में नवयान मत और उनके 22 हिन्दू विरोधी शपथ बौद्ध एवं नव बौद्ध मत के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा उनके मत (अम्बेडकर मत) को समझने का प्रयास, बनारस जैसे महत्वपूर्ण परिक्षेत्र में बौद्धों विशेषकर नव बौद्धों की स्थिति, उनके विचार, अम्बेडकर मत की तरफ दलितों का आकर्षण, इस शोध का महत्वपूर्ण बिंदु रहा है।

सर चार्ल्स फर्थ का कहना था कि ''इतिहास मनुष्य के समाज में जीवन का, समाज में हुए परिवर्तनों का, समाज के कार्यों को निश्चित करने वाले विचारों का, तथा उन भौतिक दशाओं का जिन्होंने उसकी प्रगति में सहायता की, का लेखा–जोखा है''। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जब हिन्दू धर्म के कर्मकांडों, रूढ़ियों तथा अस्पृश्यता जैसी स्थिति ने मानवीय जीवन को अत्यंत नरकीय बना दिया था। तब महात्मा बुद्ध ने मनुष्यों को सम्मानपूर्वक जीवन यापन के लिए बौद्ध धर्म के रूप में मुक्ति का मार्ग दिखाया। जहां मानव सामाजिक असमानता, भेदभाव जैसी स्थितियों से मुक्त होकर दया, करुणा से युक्त गरिमापूर्ण मानवीय जीवन जी सकता है।

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का जन्म रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14वीं सन्तान बालक भीम के रूप में 14 अप्रैल 1891 को महु (इंदौर जिले) में हुआ था, जबकि मूलवंश महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के मराठी परिवार से था। महार जाति से सम्बन्धित भीम को बचपन से ही छुआछूत की समस्या का सामना करना पड़ा। जिससे छोटे भीम के हृदय पर गहरा प्रभाव डाला उन्होंने शिक्षा के द्वारा न केवल स्वयं की समस्या का सामना किया बल्कि अपने समाज द्वारा झेले

जा रहे तिरस्कार से उनकी मुक्ति का कठिनतम प्रयास किया। वे दलित समाज के पहले उच्च शिक्षा अर्जित करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी शिक्षा का प्रयोग तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियो में अपने समाज के सामान्य मानवीय गरिमा को बचाने के लिए बखूबी प्रयोग किया। यही कारण है कि जब उन्हें संविधान निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया, तब उन्होंने अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता का उन्मूलन को सम्मिलित करके समानता की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया।

14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने दीक्षा भूमि नागपुर में पाँच लाख अनुयायियो के साथ बौद्ध धर्म को अंगीकार कर लिया। ऐसा नहीं था कि वह धर्म परिवर्तन के लिए बहुत ज्यादा इच्छुक थे, फिर भी उनका कहना था कि हिन्दू धर्म न तो स्वयं को परिष्कृत कर सकता है और न ही अपने दलित, शोषित वर्ग को सम्मानपूर्वक समाज में यापने का अधिकार दे सकता है। जो कि प्रत्येक मनुष्य का जन्मतः अधिकार है। अतः उन्होंने समतावादी, करुणामय बौद्ध धर्म को अपनाने का निर्णय लिया। जब बौद्ध धर्म में हीनयान या महायान अपनाने का प्रश्न सामने आया तो उन्होंने कहा कि मुझे न तो हीनयान और न ही महायान स्वीकार है बल्कि मेरा मत नवयान कहलाएगा, जो कि महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांतो पर आधारित होगा। चूंकि इन दोनों में ही समय के साथ कुछ अंधविश्वासी तत्वों का समावेश हो गया है।

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने अपने नवयान मत में 22 हिन्दू विरोधी शपथ लेना अनिवार्य बनाया। जिसके अन्तर्गत हिन्दू धर्म की त्रिमूर्ति अवधारणा में अविश्वास, अवतारवाद का खन्डन, श्राद्ध, तर्पण, पिन्डदान का परित्याग, बुद्ध के सिद्धांतो, उपदेशों में विश्वास, करूणा, समता के भावना की स्थापना, ब्राह्मणों द्वारा निष्पादित होने वाले किसी भी समारोह में भाग न लेना, मनुष्य समानता में विश्वास, बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण, प्राणियों के प्रति दयाभाव, चोरी न करना, झूठ न बोलना, शराब का सेवन न करना, हिन्दू धर्म का त्याग करने और बौद्ध धर्म को अपनाने से सम्बन्धित थी। नवयान बौद्ध अनुयायियो को नव बौद्ध कहा गया। जबकि यह विभाजन सही नहीं था। क्योंकि नव बौद्ध भी स्वयं को बौद्ध ही मानते है। इस सम्प्रदाय में महात्मा बुद्ध के विज्ञान एवं तर्क शुद्ध सिद्धांत ही लिए गए। इसमें अंधविश्वास एवं कुरीतियों के लिए कोई स्थान नहीं था। बाबा साहेब डॉ0 भीमराव

अम्बेडकर जहाँ बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो में विश्वास करते थे, किन्तु कुछ ऐसे सिद्धांत है, जिन्हें वह नहीं मानते थे। हमारे शोध का विषय बौद्ध एवं नव बौद्ध दर्शन के बीच तुलनात्मक अध्ययन है।

अम्बेडकर का बौद्ध धर्म विशुद्व तार्किकता, स्पष्टता, मानवतावादी और वैज्ञानिक प्रकृति पर आधारित था। बाबा साहेब ने नवयान धर्म के माध्यम से सामूहिकता पर विशेष बल देने हेतु नवयान के द्वारा मूल बौद्ध धर्म के सिद्धांतो में सुधार किया। जो कि न केवल सामाजिक सुधारों की आवश्यकता थी बल्कि राजनीतिक सुधारों की व्यापक मांग भी थी। बौद्ध धर्म में चारों आर्य सत्य पर विशेष बल था जो क्रमशः दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध मार्ग थे। जबकि बाबा साहेब को उन कुलीन सत्यों पर आपत्ति थी। उनका मानना था कि यदि जीवन दुःखमय है तो उस पर आधारित कोई भी सामाजिक व्यवस्था बनाई ही नहीं जा सकती है। क्योंकि आशा ही व्यक्ति को पुरुषार्थ द्वारा अपनी स्थिति परिवर्तन को व्यग्र कर सकती है, इसलिए जीवन दुःखमय है जैसे बौद्ध सिद्धांत में बाबा साहेब विश्वास नहीं करते थे। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को दुःखों से यथासंभव मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए।

नवयान सम्प्रदाय ने पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार नहीं किया। जहाँ बौद्ध धर्म का पुनर्जन्म सिद्धांत व्यक्ति की मुक्ति पर केंद्रित था, वही पर नवयान सामूहिक मुक्ति पर केंद्रित था। जहाँ बौद्ध धर्म में निर्वाण प्राप्ति अहम थी, वहीं नवयान में भी निर्वाण की अवधारणा निहित थी। परन्तु कुछ अलग स्वरूप में नवयान का लक्ष्य लौकिक जीवन के अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करना था, न कि सार्वभौमिक व्यक्ति की कोरी कल्पना पर आधारित। अपितु दोनो दर्शनों में ही समतापूर्ण समाज की स्थापना पर विशेष बल था। बाबा साहेब का मानना था कि जो व्यक्ति किसी की पीड़ा नहीं समझ सकता है, वह निर्वाण का कैसा अधिकारी ? बाबा साहेब का यह भी मानना था कि बौद्ध धर्म को पंडितों एवं पुरोहितो की संस्था नहीं बनना चाहिए। इसलिए उन्होंने नवयान के माध्यम से बौद्ध समुदायो को पुनर्गठित किया। समाज सेवा को भिक्षु की छवि से जोड़ दिया ताकि भिक्षु आत्मज्ञान एवं आत्म अनुभव वाली असामाजिक व्यवस्था का हिस्सा न बनने पाएं।

बाबा साहेब अनेक बौद्ध सिद्धांतो में विश्वास करते थे। उनका बौद्ध धर्म के करुणा, समानता, भ्रातित्व में गहन विश्वास था। अष्टांगिक मार्ग पर चलकर निर्वाण प्राप्ति में उन्हें पूरा विश्वास था। उनका मानना था कि इससे परलौकिक ही नहीं बल्कि मानसिक अभ्युदय में भी ये सिद्धांत अत्यंत सहायक है। उन्होंने दस शीलो पर भी विशेष बल दिया। उनका मानना था कि अवगुण ही मानवता की दुर्दशा के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार है, जो व्यक्ति को मानसिक अघःपतन की ओर ले जाते है। जो मानसिक चोट के साथ सामाजिक स्तर पर भी गिराता है। बाबा साहेब का कहना था कि सबको धर्म की बहुत जरूरत है, धर्म के बिना समाज जागृत नहीं हो सकता। समता, मैत्री, बंधुभाव, संसार के उद्धार के लिए अत्यंत आवश्यक है। दलितों का बौद्ध धर्म ग्रहण करने (नव बौद्ध) से उनकी स्थिति पर काफी प्रभाव पड़ा।

जहाँ तक दलितो के बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के पीछे कई सारे कारण सक्रिय थे, जिनके कारण हम देखते है कि 14 अक्टूबर 1956 को अचानक बाबा साहेब के साथ पांच लाख के करीब दलितों ने हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया एवं नवयानी यानि नव बौद्ध कहलाए। ये वे लोग थे जो सामाजिक तौर पर दलित, बहिष्कृत, अस्पृश्यता से ग्रस्त थे और धार्मिक तौर पर पूजा, धार्मिक यज्ञ या कार्यक्रमो में भागीदारी से वंचित कर दिये गये थे। उनके मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध था। आर्थिक तौर पर दलितो, शोषितो को दूसरी जातियों की सेवा करने को ही उनका धर्म बताया गया था। इस तरह उन पर अनेकानेक प्रतिबंध लगाये गये थे। जो स्वयं में ही अमानवीय थे।

हमारे शोध में बनारस परिक्षेत्र में नव बौद्धों की स्थिति पर अध्ययन किया गया है। जैसा कि हम जानते है कि वाराणसी न केवल हिन्दू धर्म के लिए बल्कि बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। वाराणसी में स्थित सारनाथ (ऋषिपत्तन, मृगदाव) में महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम धम्म चक्र प्रवर्तन दिया था। जिसकी वजह से सारनाथ चार बौद्ध तीर्थ स्थलो में से एक महत्वपूर्ण स्थल है। धामेख स्तूप, धर्मराजिक स्तूप, चौखंडी स्तूप, मूलगंज कुटी विहार, विपश्यना केन्द्र इत्यादि स्थल सारनाथ के महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है।

बुद्ध पूर्णिमा जो कि बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण पर्व है। इसके दौरान वाराणसी में धर्म यात्रा का भव्य आयोजन प्रतिवर्ष होता है। जिसमें बड़ी संख्या में बौद्ध एवं नव बौद्ध भागीदारी करते है। यह धम्म यात्रा अम्बेडकर प्रतिमा (कैन्ट, कचेहरी) से निकलकर पाण्डेयपुर, पहाड़िया आशापुर होते हुए सारनाथ पहुँच कर समाप्त हो जाती है। इस दौरान सारनाथ में काफी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। परन्तु यहाँ पर उल्लेखनीय बात यह थी कि बौद्ध धर्म की इस धम्म यात्रा में सारनाथ में महात्मा बुद्ध की धम्म चक्र प्रवर्तन स्थली पर अनेक धार्मिक कर्मकांडो की प्रधानता देखने को मिली, जो निश्चित रूप से बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतो, शिक्षाओं के विपरीत थी। नव बौद्ध लोग भी ऐसे क्रियाकलापों में सक्रिय थे। जो निश्चित रूप से बाबा साहेब के 22 शपथों के अनुरूप नहीं था। धम्म चक्र यात्रा के सम्बंध में मूलगंध कुटी विहार के भिक्षु पी शिवली का कहना था कि यह धम्म यात्रा महात्मा बुद्व एवं सम्राट अशोक, बोधिसत्व एवं अम्बेडकर के विचारों एवं संदेशों को जन–जन में प्रचार कर रही है।

वाराणसी में नवबौद्ध, बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की जयंती को भी बड़े धूमधाम से मनाते है। वास्तव में इसका उद्देश्य बाबा साहेब का उनके द्वारा शोषित, पीड़ित, एवं दलित वर्ग के लिए किये गए कार्यो के लिए तथा अस्पृश्यता निवारण, समानता का अधिकार, समाज में सम्मानपूर्वक जीवन यापन का अधिकार, शिक्षा आदि जागरूकता एवं आर्थिक हालात में सुधार करने के साथ ही कमजोर वर्ग के लोगों का कल्याण सुनिश्चित करने के प्रयत्न के लिए उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए प्रतिवर्ष इन लोगों द्वारा जन्मदिवस को एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करके बाबा साहेब को याद किया जाता है। जैसे चित्रकारी, प्रश्नोत्तरी, निबन्ध लेखन, नाटक मंचन इत्यादि। जिसमें नव बौद्ध लोग बहुत बढ़–चढ़कर इन कार्यक्रमों में भागीदारी करते है। बाबा साहेब के विचारों का प्रभाव वाराणसी के लोगों पर कितना पडा है, यदि देखा जाए तो स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि दलित से नव बौद्ध बने लोग हर मामले में चाहे वह शैक्षिक हो या आर्थिक, सामाजिक भागीदारी दलितों की अपेक्षा ज्यादा सक्रिय है। वाराणसी की कुल जनसंख्या में बौद्धों की जनसंख्या लगभग जनसंख्या का 0.04 प्रतिशत (1470) लोग है। इसमें नव बौद्धों की

जनसंख्या 80 प्रतिशत लगभग 1200 है। यहाँ उल्लेखनीय है कि नव बौद्ध स्वयं को किसी दायरे में नही बाधते है। उनका मानना है कि नव बौद्ध जैसी कोई संकल्पना नही है। शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाएं एवं पुरुष ज्यादा सक्रिय भागीदारी करते है। दलितो की अपेक्षा नव बौद्ध अधिक शिक्षित, उच्च पदस्थ, सामाजिक रूप से काफी सक्रिय लोग है।

लहरतारा के एक कस्बे के सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी कि वहाँ की अधिकांश महिला एवं पुरुष बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के बारे में जानते है। किन्तु उनके मत के बारे में उनको सम्पूर्ण जानकारी नहीं है। लहरतारा कस्बे की आबादी 5124 (2011 की जनगणना के अनुसार) है। जबकि बौद्धों की जनसंख्या लहरतारा कस्बे की जनसंख्या की 0.1 प्रतिशत है। लहरतारा में जो लोग नव बौद्ध बने है, वे अनुसूचित जाति (चमार) से ही बने है। यहाँ की महिलाओं ने भी स्वीकार किया कि हम महात्मा बुद्ध की पूजा धूप–दीप से ही करते है। यहाँ पर सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के वे लोग जो बौद्ध धर्म में धर्मांतरित नही है, इस बौद्ध उत्सव में बढ़–चढ़कर भागीदारी करते है। सामान्य वर्ग के लोग भी इन उत्सवों में सक्रिय भागीदारी करते है जो कि निश्चित रूप से अत्यन्त सराहनीय है।

शोध का उद्देश्य

नव बौद्ध बने दलितों की स्थिति का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य रहा। विशेषतः बनारस के संदर्भ में।

1. लिंग अनुपात क्या है,
2. साक्षरता की स्थिति क्या है,
3. नव बौद्ध बनने के पीछे कौन सा कारण ज्यादा प्रभावी हैं,

वास्तव में नव बौद्ध आंदोलन बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के विचारों एवं सिद्धांतों पर चलकर किस सीमा तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा। इन समस्त तथ्यों की खोज करना ही इस अनुसंधान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

परिकल्पना

1. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को अपने सामाजिक जीवन में जिन अवरोधो ने उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया, बौद्ध धर्म अपनाने के बाद वह उन समस्त प्रतिरोधो से निबटने में कामयाब रहे।

2. दलितो के बौद्ध धर्म अपनाने की मुख्य वजह बौद्ध धर्म की विशिष्टतायें थी, जिनको बाबा साहेब ने स्वीकार किया था।

3. नव बौद्ध दलित एवं गैर बौद्ध दलितो में बाबासाहेब को लेकर मतभिन्नता हैं।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य की मुख्य पद्धति में सर्वेक्षणात्मक, विवेचनात्मक तथा अवलोकनात्मक एवं साक्षात्कार विधाओं का उपयोग हैं। जिसके तहत अंतर्गत बनारस क्षेत्र का भ्रमण व अवलोकन करके सामग्री एकत्रित किया जाएगा। जिसमे प्राथमिक एवं द्वितीयक आकडें, शोध रिपोर्ट, ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकायें इत्यादि सम्मिलित होगें।

शोध अध्याय की रूपरेखा

अध्याय 1– भूमिका

अध्याय 2– बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं दर्शन

इस अध्याय के अंतर्गत बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय एवं बाबा साहेब के बौद्व दर्शन को वर्णित किया गया है।

अध्याय 3– बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत बौद्ध धर्म एवं नव बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्याय 4– नव बौद्ध आंदोलन के उद्भव का कारण (दलित चेतना के संबंध में)

- सामाजिक कारण
- धार्मिक कारण
- आर्थिक कारण

अध्याय 5– नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में

इस अध्याय के अंतर्गत नव बौद्ध आंदोलन भारत में, विशेषतः बनारस के संदर्भ में को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय 6– निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय के अंतर्गत निष्कर्ष एवं सुझाव प्रेषित है, तथा परिकल्पना का परीक्षण निष्कर्षित है।